अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual E-Journal)
ISSN: 3108-1541
Vol.2, Issue 1, Year 2025, pp.155-160
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/

किन्नर : साहित्यिक अभिव्यक्ति

रंजू मौर्या* & प्रो. रचना आनन्द गौड़**
*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, एस0एस0 खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
**शोध निर्देशिका, हिन्दी विभाग, एस0एस0 खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

सारांश:-

साहित्य सदैव समाज की परिवर्तनशील यथार्थ का दर्पण रहा है, अपितु साथ ही साथ सामाजिक चेतना का एक महत्वपूर्ण संवाहक भी रहा है। वस्तुतः इस मायामयी समाज में कई वर्गों के लोग अपना पांव जमायें हुए हैं किन्तु इसी समाज के कई भाग ऐसे भी हैं जो हाशिये का जीवन जीने हेतु विवश है। अपनी पहचान बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, हालांकि हमारा साहित्य ऐसे वर्गों की पीड़ा, संघर्ष तथा उनकी अभिव्यक्ति को स्वर देने का कार्य मजबूती के साथ निभा रहा है। समकालीन साहित्य का एक सशक्त और महत्वपूर्ण विषय किन्नर विमर्श है, जो अपनी चेतना को साहित्य के माध्यम से समाज के धरातल पर उतारने का प्रयास कर रही है, साहित्य किन्नर समुदाय को सम्मानपूर्ण जीवन, सामाजिक स्वीकृति तथा मानवीय अधिकार प्रदान करने का हरसंभव दायित्व का निर्वहन लगातार कर रही है। दलित, स्त्री तथा आदिवासी विमर्शों के अपेक्षाकृत, किन्नर समुदाय के जीवन का यथार्थ, संघर्ष और आत्मचेतना को गंभीरता से समझने का प्रयास बहुत विलंब से आरम्भ हुआ। किन्नर: साहित्यिक अभिव्यक्ति से तात्पर्य उस साहित्य से है जहां किन्नर समूह, सामाजिक उपेक्षा,

Article Publication:
Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:
रंजू मौर्या
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, एस0एस0 खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
Email: ranjumaurya0@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

सामाजिक बहिष्कार मानसिक संघर्ष, आत्मपहचान तथा इनके जीवन अनुभव को एक रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह अभिव्यक्ति दो रूपों में प्रस्तुत की गयी है, एक स्वयं किन्नर लेखकों द्वारा तथा दूसरा गैर-किन्नर लेखकों द्वारा रचित साहित्य ।

मुख्य शब्द (Keywords) :

किन्नर विमर्श, हाशिए पर जीवन, समकालीन साहित्य, आत्म पहचान सामाजिक चेतना, किन्नर तथा गैर किन्नर लेखक।

प्राचीन भारतीय साहित्य रामायण, महाभारत और पुराणों में किन्नरों का उल्लेख मिलता है, किन्तु वहाँ उन्हें स्वतंत्र सामाजिक इकाई के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, वे प्रायः प्रतीकात्मक या सीमित भूमिकाओं में ही दिखाई देते हैं, जैसे महाभारत में शिखण्डी का वर्णन मिलता है। मध्यकाल में भी इनका वर्णन संकेतात्मक और प्रतीकात्मक रूप में मिलता है। आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रारंभिक दौर में किन्नर पात्र सामाजिक रूढ़ियों के भीतर ही चित्रित हुए। इस दौर का साहित्य किन्नर जीवन की वास्तविक समस्याओं को समझने में असमर्थ रहा परिणामस्वरूप किन्नर समुदाय साहित्यिक हाशिये पर ही बना रहा। किन्तु किन्नर साहित्यिक अभिव्यक्ति का वास्तविक विकास आधुनिक और समकालीन हिंदी साहित्य में ही संभव हो सका है।

किन्नर विमर्श एक ऐसा विषय है जो समाज के उन पहलुओं को दर्शानें की कोशिश करता है जिसे हमेशा उपेक्षित नजरों से देखा गया या अनदेखा ही कर दिया गया, पौराणिक कथाओं से यह माना जा सकता है कि किन्नरों की उपस्थिति प्राचीन काल से ही है, प्राचीन काल या मध्यकाल में आधुनिक काल की अपेक्षा उन्हें सम्मान दिया जाता था। वर्तमाल काल में किन्नरों की स्थिति हास्यपद बनकर रह गयी है, आज के समाज में किन्नरों की स्थिति यह बयां कर रही है कि उनके साथ हो रहे भेदभाव, अस्पृश्यता, रूढ़िवादी सोच ने उनके दुःख को और भी बढ़ा दिया है, आधुनिक युग किन्तु वही रूढ़िवादी परंपरा। परन्तु बीसवीं सदी के उत्तराद्ध में विशेषकर 1990 के बाद सामाजिक चेतना के विस्तार के साथ किन्नर विमर्श ने साहित्य में स्पष्ट रूप ग्रहण किया। जैसे-जैसे समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवाधिकारों की चेतना विकसित हुई वैसे-वैसे साहित्य में भी किन्नर जीवन के यथार्थ को समझाने और व्यक्त करने का प्रयास तेज हुआ। हिंदी साहित्य सामाजिक बदलावों तथा हाशिये के वर्गों की आवाज को प्रमुखता देने की

दिशा में निरंतर अग्रसर रहा है, साहित्य मानवीय अनुभूतियों की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम तथा समाज के विभिन्न वर्गों के अनुभवों को शब्द देने में साहित्य की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है।

यदि मैं अपनी स्मृतियों के भंडार में झाँककर देखूँ, तो उनके दृश्य सजीव हो उठते हैं, इसी क्रम में ध्यातव्य है मुझे कि कई वर्षों पूर्व जब गांव में मैं रहती थी तो मैंने देखा था जब किसी के घर शिशु का आगमन होता था तो वहां की ग्रामीण महिलाएं आपस में काना-फूसी करती थीं कि अगर हिजड़ों को खबर हो गयी तो वो आ जायेंगे और बिना कोई निशान (कीमती धातू) लिए बिना मानेंगे नहीं। उस समय मुझमें इतनी समझ नहीं थी तो मुझे लगता था कि ये कौन है? क्यों सब उनसे डरते हैं, और जब किसी के घर बच्चा होता है तभी ये क्यों आते हें? तमाम प्रश्नवाचक बातें मुझे घेर लेती थी। साथ ही साथ ये भी आभास होता था कि वो भी तो हमारे जैसे ही तो दिखते हैं फिर उन्हें हिजड़ा क्यों बोला जाता है? और इस शब्द का मतलब क्या होता है? ऐसे ही कई विचार मन में उमड़ते-घुमड़ते रहते थे। समय के साथ-साथ प्रश्नों का उत्तर मिलने लगा था, जगह-जगह कई प्रकार की भ्रांतियां देखी, जैसे- ट्रेन से सफर के दौरान, बस में, कभी-कभी त्योहारों पर, इनका पेशा था तााि‍लयां बजाना, पैसों की मांग करना। एक बार ऐसा भी हुआ कि कुछ लोग किन्नरों की तरह ही वेष-भूषा धारण करके जबरदस्ती पैसे मांग रहे थे, एक सज्जन बोल बैठे, ''तुम लोग असल में तो किन्नर नहीं लगते क्योंकि किन्नर समुदाय इस तरह बदसलूकी और बेहुदी हरकतें नहीं करते, वो चिढ़ गए और लड़ाई कर बैठे कहा-सुनी हुई, फिर वो लोग चले गए। इस घटना को देखकर महसूस हुआ कि, तो ऐसे भी कुछ बने किन्नर हैं जो वास्तविक किन्नर समुदाय की संस्कृति को अपनाकर उन्हें और भी समाज के नजर में भेदभाव तथा उपेक्षा का शिकार बना रहे हैं। किन्नर समुदाय की संस्कृति के अनुसार वो लोग किसी त्योहार पर अपना बक्शीश लेने जरूर आती हैं किन्तु उनके प्रति समाज में वही करना, गलत या अनुचित शब्दों का प्रयोग करना। ये सब देखकर लगता है उन्हें कितनी पीड़ा पहुंचती होगी। किन्तु इसका असर हम सभ्य लोगों पर क्या ही पड़ेगा। जिस स्वरूप में वो हैं उसमें उनका क्या दोष? उन्हें तिरस्कृत करना कहाँ तक युक्तियुक्त है? हर जगह उन्हें बेइज्जत करना सही है क्या? हमें इसपर विचार करने की जरूरत है तथा समाज में बदलाव की जरूरत है। किन्नर साहित्यिक अभिव्यक्ति लैंगिक द्वैतवाद और सामाजिक बहिष्कार की संरचनाओं पर प्रश्नचिन्ह लगाती है।

इस अध्ययन में हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श पर लिखे गए उपन्यासों में मैंने कुछ उपन्यासों का अध्ययन किया, जिसमें किन्नर पर आधारित प्रथम उपन्यास 'यमदीप' जिसकी प्रसिद्ध लेखिका नीरजा माधव हैं। हालांकि रचनाकार उपन्यास में किन्नर को किन्नर न कहकर 'हिजड़ा' शब्द से संबोधित किया है। नीरजा माधव का उपन्यास

यमदीप, हिंदी साहित्य में किन्नर के जीवन को संवेदनशीलता के साथ केंद्र में लाने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह कृति समाज द्वारा उपेक्षित तृतीय प्रकृति के संघर्षों को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करता है। साहित्यिक दृष्टि, भाव-प्रवण भाषा और वैचारिक विविधता के कारण यमदीप किन्नर विमर्श का सशक्त दस्तावेज बनकर उभरता है।

यमदीप का प्रतीकात्मक नाम किन्नर की उस स्थिति को दर्शाता है जो प्रकाश में होते हुए भी समाज की दृष्टि से ओझल रहती है, उपन्यास लिंग-भेद से परे आत्मा, ज्ञान और मानव अस्तित्व की दार्शनिक अवधारणा को सामने लाता है, साथ ही यह समाज की संवेदनहीनता के बीच किन्नरों के संघर्षों, करूणा और दमित मन को मार्मिक रूप में उजागर करता है। यह उपन्यास समाज की बढ़ती असंवेदनशीलता और किन्नरों के प्रति अमानवीय व्यवहार को उजागर करता है, उपन्यास में बच्चियों की खरीद फरोक्त, अपहरण और गरीबी के कारण उन्हें किन्नरों को सौंप दिए जाने की त्रासद वास्तविकता दिखाई गयी है। प्रसवपीड़ा से जूझती स्त्री की उपेक्षा और नवजात शिशु के प्रति समाज की बेरूखी मार्मिक रूप से चित्रित है, नाजबीबी जैसी किन्नर पात्र उस बच्ची को अपनाकर मानवीय करूणा और मातृत्व का परिचय देती है- नाजबीबी (नंदरानी) उपन्यास की नायिका है जो उस स्त्री और नवजात शिशु के लिए मदद की गुहार लगाती है किन्तु कोई मदद को नहीं आता तो वो कहती है- ‘‘हम इसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं, अरे हम हिजड़े हैं, हिजड़े इंसान हैं क्या जो मुंह फेर लेंगे।’’

उपन्यास में नंदरानी की माँ नंदरानी को पढ़ा लिखा कर लायक बनाना चाहती है, जब नंदरानी की माँ नंदरानी का दाखिला स्कूल में कराने को सोचती है तो उससे महताब गुरू द्वारा कहा जाता है-

‘‘माता किसी स्कूल में आज तक हिजड़े को पढ़ते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? मास्टरी में, पुलिस में, कलेक्ट्री में किसी में भी।’’

उपर्युक्त संवाद के माध्यम से स्पष्ट होता है कि सरकार और समाज दोनों हिजड़ों की बुनियादी आवश्यकताओं के प्रति असंवेदनशील रहे हैं।

समाज के रूढ़िवादी विचारों का भय लेखिका ने निम्नलिखित माध्यमों से दिखाया है- नंदरानी के पिता उसे वापस घर ले जाना चाहते हैं किन्तु उन्हें उसी दंश रूपी समाज का डर सता रहा है, जिस पर महताब गुरू पात्र द्वारा कहा गया है- ‘‘आप इस बस्ती में रह नहीं सकते बाबू जी और अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नहीं सकते दुनिया में बदनामी और हंसी हसारत के डर से हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पायेंगे न आपका परिवार इसलिए इसे अब इसके हाल पर छोड़ दीजिए यही उसका भाग्य था यही बदा था।’’

नंदरानी जो अपने घर कभी-कभी जाने को उत्सुक होती है तो उसे अपने भाई-भाभी का कथन याद आ जाता है, ''तुमको हम इस परिवार में नहीं रख सकते तुम समझ लो तुम अनाथ हो कोई नहीं तुम्हारा दुनिया में।''

लेखिका हिजड़ों के लिए आरक्षण की माँग को न्यायसंगत बताते हुए उनके मानवीय गुणों, दया, ममता, करूणा को रेखांकित करती है। लेखिका हिजड़ों से प्रेम, स्नेह और करूणा से भरे संवेदनशील मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करती है न कि घृणा के पात्र के रूप में। हिजड़ों की बातें, गीत और भाव-भंगिमाएँ उनके भीतर छिपे पीड़ा, अपनापन और समाज के प्रति प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है। नाजबीबी और अन्य पात्रों के माध्यम से माता-पिता से बिछड़ने की पीड़ा और फिर मिलन का मार्मिक चित्रण हुआ है। यौन शिक्षा के अभाव में परंपरागत सामाजिक मान्यताओं के कारण किन्नरों की स्थिति और अधिक जटिल हो जाती है। नाजबीबी के माध्यम से किन्नर जीवन के साथ-साथ समाज में हो रहे भ्रष्टाचार, पाखंड और विसंगतियों पर भी तीखा प्रहार है।

किन्नर साहित्यिक अभिव्यक्ति के विविध आयामों के माध्यम से जैसे- उपन्यास, कथा साहित्य, कविता, कहानी आत्मकथा आदि रूपों में गैर-किन्नर लेखकों ने तथा वर्तमान समय में किन्नर लेखकों द्वारा रचित आत्मानुभूत साहित्य ने इस विमर्श को प्रामाणिकता प्रदान की है, किन्नर जीवन से जुड़े मुद्दे जैसे पारिवारिक बहिष्कार, सामाजिक भेदभाव, पहचान संकट, शिक्षा और रोजगार की समस्याएँ साहित्य में स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई हैं, यह साहित्य केवल करूणा की अभिव्यक्ति न होकर सामाजिक न्याय और समावेशी समाज की मांग करता है।

निष्कर्ष:-

किन्नरों की संख्या लगभग 50 लाख से अधिक होगी फिर भी इन्हें समाज के हाशिए पर ही रखा जाता है। इनके साथ अमानवीय व उपेक्षाकृत व्यवहार किये जाते हैं हमें यह समझने की जरूरत है कि जननांग दिव्यांगता के कारण हम इन्हें उपेक्षित नहीं कर सकते, इन्हें भी समावेशी समाज में जीने के अधिकार के साथ-साथ हर क्षेत्र में अधिकार होना चाहिए। केवल थर्डजेंडर नाम दे देने से इनका शोषण नहीं रूक सकता। हां यह कहा जा सकता है कि वर्तमान हिंदी साहित्य में किन्नर साहित्यिक अभिव्यक्ति एक सशक्त, चेतन और परिवर्तनकारी स्वरूप ग्रहण कर रही है। किन्तु इस विषय पर और अधिक संवेदनशील, लोकतांत्रिक और मानवीय बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। समाज के रूढ़िवादी मानसिकता को चित्रित करते हुए, चित्रा मुद्गल अपनी रचना पोस्ट बाक्स नं0 203 नालोसोपारा में कहती है, ''जरूरत है सोच बदलने की.... संवेदनशील बनने की। सोच बदलेगी तभी जब अभिभावक

अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। यह पहचान जब उन्हें किन्नर के रूप में जीने नहीं दे रही समाज में, तो सरकारी मान्यता मिल जाने के बाद जीने देगी?''

''आधा तन-मन, आधा जीवन
आधे हैं अधिकार,
इस पूरी दुनिया में हम कब,
किसके हिस्सेदार.....?

सन्दर्भ सूची-

- कुमारी, पार्वती. (2019). किन्नर समाज संदर्भ तीसरी ताली. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.
- गुप्ता, कुमार, आशीष. प्रकाश चंद्र. गुप्ता कुमार बृजेश. (2020). किन्नर हाशिये का जीवन. सन्मति प्रकाशन.
- पट्टनायक, देवदत्त. (2015). शिखण्डी और कुछ किन्नर कहानियां. दिल्ली. राजपाल प्रकाशन.
- द्विवेदी, शरद. (2022). किन्नर अबूझ रहस्यमय जीवन. प्रयागराज लोक भारती प्रकाशन.
- सिंह प्रताप, डॉ. विजेंद्र (2017). हिंदी उपन्यासों के आइने में थर्ड जेंडर. कानपुर अमन प्रकाशन.
- माधव. नीरजा. (2021). यमदीप. नई दिल्ली सामयिक प्रकाशन, पृ0 12, 94, 93.
- मुद्गल, चित्रा. (2019). पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपारा. नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन.
- भीष्म, महेंद्र. (2016). किन्नरकथा. नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन.
- त्रिपाठी, लक्ष्मी नारायण. (2015). मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.